kulgam 6.pdf

This manuscript includes ,

Shri Ganapathi Mantra



नी ग्लेमही के संबुक्तिय है भने। किलिए अपने श्रमकेशकर क्ष ३ भववाणिनक्ष ३ भव उधारा अभवें दिशकार म य ३ हिन्दिश्च दूसर विश्वी नामन अवक्षेत्र उट्योपस्त हैं अन एएं ० वित्रभेद्रगत्रात्रां नग भिन्य छिन् श्रुच्य भूत्रधेडु भाग भद्रभूमी हुय भूरुपाय है भभगविभि उविभः एष्ट्र उच्चेक कमवः गविचम्हिल्भाउवभ अभगमनः जिमाश्च हेने कार्य Tion of

एड्रिएविवीउले दिमञ्जिति भन्नेवभवारङ्गाएवः गुस्तर् शिक्षेत्रवाधिय ३:६५३भिव इर्गिन्द्र उम्बेग्ड हैं वेशभाग क्षं विषयक्षक्षक्ष कामनंत्री क्रिक्शकालं विश्व क्रिक्रितिई नउवेनव अपिविष् शिहरक्षे मप्भीम्डलस्ड **इजिए श्रेश के किए हैं** उद्धिः भाउउप भक्तरयष रंकाभिडेनरा क्रामिकगत उन्धांपच भूमी असदे दिसद

ं दिनगर्भ विदिनगर्भ १ जुक्तंगर्भ

हिर्मित्री ह सिञ्चालिक जिस्म ३ भग ३ भग ३ भग ३ प भाउमा ३ मितिगाचु ३ धाउ लास ३ म उरिस्मास १ य १ वयाउपरिवास्त्र १ वस्तु १ असम्बद्ध असविधानिरामण अ भवर विविष्मय अभवम्भाव क्रम्य अभवग्रधम् विम्वयः सवरंगाविवाय अविभिन्न र भववि अवित्रमन भवक्षेत्रक वेपम्बेहः शुरु ॥ ग्वन्तुं । वन्भक्राव्य उस्क्ष्रक्रम् य अभ

अमीपनुगय अविकएकेम ना वन रडमगीराय ३ भन्धुमर्गिर भवमय भ्वम् । गएइनस् वय ३ क्रथम्ब्रेय १ अन्द्रवर्तीय म्ग्र ३ केपानीभूग्र हाव वेशवी अम् ए । य अ विवस्त्री ह थक्रम्य ३ एय ३ छन्। ३ एए ल अकर्त अक्त अक्ट अ भूफाल अ यह व गह भवा कुउ वंश्रवा िभामवा ज्ञाक्षांचा य अभावा प्रयाभितीय भष् अ कथ्य ३ विम्भय ३ प्यामक्रि

。公司等 19 海流的 18 2 年 5 3 4

ग वि

के मिन श्रे राजानी के हिंची क्रोबेरीक्ष्यपूर्विक म्हण्ती वा एक गीक भग्नी वा भक भीता विगिनीं मुन्दे विगीता नकमाराभिनीक कुवनगरभिनी क्रभेड़कारित्रीक वेश्वण ह ण्डणश्रक्त जनभाषी भ्रा भाग महाय दिन्श्य दिन वस्थय भहारय भहारय भरायभर्षराष्ट्र नगरह ३ उ इपनम्य इस्तिभाषाङ नवस्रिष्ट्रा विम्भक्रावडी भिक्

. जी शिक्षणेष अंजिमी ग्रीह वर्ष्णेर भवत्र्धार्गाविकात् % अन्य विक भिडभेषको भड अध्या स स्माना अद्भुक्षित्र ल भड्योगवभूमि उस्का इलकड़ नामहत्र माध्या सतिलिइ विरुष्टिम्म मा स्यम् भद्रकेष्वक्रभन्तिम् विश्ववंश्र एल्व असीधमन अ्वमय । जुवमय । मिएम व्यान्ध्रपये अस्त म्हान इवग्रावडक्येविन मिनिनाः

明

गि वि

宗使学习到于对于和 S. BERRIAR CO. 10 C THE PREPARE स्त् समर्विमित्रिक्षेत्रकार मान्या प्रमाविभाषाग्र नानीनंड दिमहत्तकप्रभाम किहितियं अतादिक्रं भ्र किंग्रिय एक अस्तियं भारकीडकर निश्वकर हैवी भचमर्क प्रवित्त मिनी हिभद्र मार्थसंबद्धभयाउधानः विश्वेष्ट वद् अहमपाउसन् क्रिकिश्च

भगउभागः विहार्गायामा न वेजमार्ग मुद्रभयक्र मुक्त **通行的证明的是自己的证明的** व्याग्त्वण्ड्य उस्चात्र्येष उसान हेटरिलश्रीच्यामी मक्त्रमभाज्ञ । प्रशासिक क्ष्यमुद्रभयुड्मान व्य विभंग विभिन्न युद्धिभायभाग क्रनः भामन्यवर्गमास्त्रह भवाउश्रद्ध वे अड्डास्ट्रिसिश र किविस्य समा कार्ड शाय है। HEER BENEFINE नं देखें

जुन्ने, खेबिपाइप्तरं भड़ारीप्तरं-क्षेत्रपूर्व विषम् श्वा का भवाष्ट्र भिम-रियम्बर्धाः स्थान्त्राः स्थ हार संस्था स्वयंता स्वयं रेश्व है पिमामहां नुभाहों यह एवं महभए विने एवं विविश्व भार्यक्रिया स् समाद्या समहा वरमस लां भूजाभक्षां संबद्धार ंश्विति अभूद सच्छान्तिज्ञाभ बिजाभिज्ञास्य **एउसभि**स्य होते मित्रिक्षणाञ्चित्रिक्ष १ किस

य शहिक्य अलाइ इंडल्य भवस्थिनं भिवास्थ अञ्चल क्षेत्र १ क्ष्म १ विश्व दिया अवाविधंक गान भविधेक न्य ए लाई भविधेक इयु व गीनभाविधेक्युक्त्युक्त द्विमंकर्य अक्त्य के द्विष कर्तय श गतिन विधेक्र मय श नुस्काविधंकमय् अभिन लाविधंक मय ३ दिशक न्य अ जाए साविध्य के प्रश क्राम अविधक हुए १ सिव्हिम

5

जिल्ला

हा।

CC-0. In Public Domain.

वस्त्य अभविमकन्य अभित्र विवेक्कर्य ३ श्राप्ति धेक्कर्य ३ भवेभाइविधकन्य अजिक्वि भेकत्य १ कलहा अविधंक द्व १ क्षानाविभक्तम् अभवविभ कर्व व समक्ष्मिय व भग ते अस्ते व हिंस था जिस स विमुण्याहरू के महि विमान अदय भिर्क प्रभन्न ने ने स्थल भी ल एफेरेवरमंभर् अपन नंत्रत्य भन्नकेविकित्त्य पं सिहता ३ हिन्द्रवा ३ ता भने ते छ

ग्र-

स्य अ हो स्वर जिल्ला कर कर कि क्रिमानिक में में मिया के जी हैं। उहारपालन प्रक्रिय अन्य उत्रउधिमामामाकस्य १ वर्ग यहार्यभग्रह्मय अमृतिका रंक्ष्म्य ३ ये निर्निर्मे हैं इ बंब ए उट्टिशियार र जिंदिशिय मानिद्रभूष्ट्रं के मुख्यं के क नुभया है। व कामग्रद का मस्यूष्ट्या अस्तर्य । उन्हें ३ व माग्य इंडिग्ड भित क्रान्ध्राथभूमुक्रियाव

क्ल्बिनक इ किल्लिन ३ अक समाप्त इ.

e 275 PEP 2 1882. in crie cany said usited the days श र वार्षान्त्रीवास ३ नकर ३ ह विस्ताव अभवविभावितामय ३ भंबद्या विश्वेभय । भवपञ्चित इस्य ३ सब्या अन्य १ हि शिविश्रद्रभवविश्रविरासरे भवार्षद्धराउद्गणम्बद्धाः न पान स्वाहरणहराम क्रास्वयमय ३ महरू हर स्विधिस्त्राम् स्वर्भस्य श्र

नरं ३ हेर वर जिल्ला क्रिमिश्निक में हिंदिय अ अति उहार्थाना प्रक्रिय अस्ति उत्रहिष्ण मार्गिक स्थि । जुन यहार्यभारतिय । मिलि गढाह्मय अ योगिनीन है अबद ए वेट्याचित र जिम्मिति माभिद्रभन्ति । जुन्द्र देश नेमस्यक्ष ३ क व्यापन कर् मध्यप्रचंद्र-अशुरुविक उन्हें ३ वर्णाप्त्रियुद्धिति कार्यक्षान्त्रक्रियाक

विकास अधिकार । व प्रकार

वहरास्थाण अभाव है स्राधि कवरमिय अ गण्मिनक वर्गम्य इल्इडयासिये १ पश्चमध्या मय ३ न्याहरूपस्त्रमञ्जूष मुक्यरमय अध्यक्षयाम्। राहित्वरह हैं, प्रस्कृतका मय १ भू लिउ भिन्न भागकत दर्धिन्यव एसिधा भड़ब नम्य १ नगर इस्यंगमय १० निहिक्क येन मय थे के इंग्रहर्ग मय ३ क या पान्ति के चे राम छ ३

एपिन्द्रहर्गमय अमृह्यं भविष्याभय ३ भन्धिय वा विग मय ३ भवर जित्रभग ३ भव अवग्रं विम्वय । भवरिंग ी, अंग्रेड कार्य ३ तत्रच ३ संस् हत हे हेट्य ३ कर्मच ३ इंभेग ३ इभग इभन्ग इभग्य इन्ट्य इ कटन ३ केंक्स ३ वेर्न ३ व्रम्भ ३ माभवान राभवा ३ र गवा ३ कामवा ३ भट्टव ३ लाट्स ३ ग्वर्च ३ एल्च ३ वंद्य अस्ट्ये अभाद्यभय ३कट्य ३ गाहित ३ लिस्टी ३ किट्टी ३ क्टूरी ३

स्थि १ भग्न ३ पुरा ३ विवय य अ विक्रुश्य १ विज्ञास अग्रेस गुड़ द्रमा प्रविश्वापन माण इक्राप **金头护当时**多*强*当全对东国家 भूजित्वा शास्त्र विकास स्थापन कीमी देश देश अपन गर्ने गर्न विभेद्राप्त स्व भारत है जे बुक् क्रव्य वम्लंभूमिन ज्वामध्य गरमेशहराउन शक्हामाकिः न्याभावन विषय विषय न्वज्ञमञ्जभवाद्यंकित्विधं A 9 C Post Contain Digitized by Gangotri

जिस् । अस्ति १ मा श्रीति १ मा श्रीति वेड्डिए मेगड विक्रमेगड 育。 A OC अक्रमाइ अपयानमहा अभू औ Repetition of the हिंडिक शिक्डिय १ अस्विभा विसम्भाग भव्यक्ति वृंभयं ९ अविषेत्र विस्वय १ भवित एक्स्मिय व है समिविश्वपत्र, सवि अविराभने भवक्षेषवुउद्योगिर् ं बहारहार गणन राजिने ्रियार्ड अवविश्रविक्रि ESTSTATION TO THE

अन्य क्रियुक्त क मय असे थेए। यह असे ,गु ५ कुउन्ड भिमामवासाम्ब · 外域學可读的更多的 अपोरीके भएडिए इस्टिक्निये ं विकरी जैसे एक स्थापन कें अविष्युति । विषयि लारकारों हे साम स्राप्त तीति धर्पछण्डश्रुप्त अविविद्ध उर्गोविध्य एए। इस् अन् अ क्षेत्र विषय स्थानित स क्षेत्र होते । अपना कि

100 mg

图和它所创作图 प्टा ३ अन् ३ छन् ३ मन् अण्डल १ अपन ३ व य वे श्राप्त द्वार रक्षेत्र अगण रीत भए। जिए है अल अ विशे अभिविश्वे सण्ड स्तात्र से विश्वास्त्र भगत्र में अन्य में से स किल्ला अभीके व जिम अभीव

प्रश्लेबाइस्य द्वास्थ्य हिर्ण उसंबिद्ध भक्ता कर विश 深化等 对新河北美子中亚东 हित्र तमा १० ।। विशेष हित्र

a:

03

विग्रहर यह विष्ट्रन व ले हैं पर करते हैं द्धानित विश्व के विश् जिल्ला है। विकास के विकास किया किया ला जिमाः अदय विनिक्त राज्यत्व वस्त्र क्षेत्र का निर्माण क्षेत्र है विभिन्न विभिन्न विभिन्न लिन ०० स्थमार्यंत्रम्ति।

स्थियुष्ट हु। गठक सम्बद्ध प्राप्त राग्य दह्य महरिक्ष इया यग्रभवडाभुडा क क्ष्यम् भदक लाज्य भन्य स्था गाः उराभाउध्य वश्वमानिज्ञ च इजम्म केरवाः भागकराम् सम वस्य ५३भः स्थाप्त्य युद्धम वस्याग्यायित उधार्थस्य भिग्न विनगान ने विकास मिला किया निर्मा का निर्मा किया विष्टु इस्तेगं मनी इस भवश्रेष अअम्हड्डाईअंगग्रेषिये वि विस्मद रंजभद्यण्ण भ्रतीस्त्र

स्पर्णि उत्तर के निमान्त्र येगिनीच परिष्ठ ए अवन्य क्षेत्रवावध्यवध्याचित्रका श्राद्ध व निर्मिष्ट सिक्स व व्यव ए दिए ३५ प्रश्ने १ विष् क्रमान्य हैए। ३३। ५३ विकि क्रियामनविषण्डप्रिक्षेत्र हिना सरगामक स्थापन इतिन्धित्रक्षेत्र है किहिंदिये वर्षण्डण अपुर ३ छ्या गर्भ नी उत्तरी में गैन हों भए हिए। न इसम्बन्धा । विस्त्रमात्रम

200

GC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चिन्भेवडक हैंग्व य ॥ इस्ती इथड्या वडक हैंग्बेभुर्भर्थे थेन्जा एपिः रिष्ट्रप्रदः सीमपुक्केने प्रचंडाः द्वीर मान वडक्य मान भूमा के किनका महीश्रीभक्किया वितियाः गिरमित हुनाः।। मान्यस्य हुमाः।। विद्वार विद् ्य नमुभूष्ट नमः कि ही वी हैन्वय उल्ली है नुभः रहेरे च चप्यस्य उपाय भएत है नुभः रिए पूर्व जान जा जान भिक्छ नमः ति देवे बद्धक्य क्रिप्रकृष्ट्र रुगः । एकः बः क्राउल निथाशकुं उभः एउकारुभः॥ रेजेंदरं ह मयय नभः रिंद्री नी मिस्से अन्त रिंद्रेने मियाची बधार एवं है वे कवगर्द हुन ॥ एक क्रीने ने इर्वय के व्यक्त ॥ क्रांव ने प्रयक्त

प्राप्तितारं मुद्धसूष्टिक भड्डम भतस्य दिह न्त्रभ नीलम्ली पुरस्तु में नोलग्जन स्थाप के स्थाप के स्थाप के प्रमुख के स्थाप महत्व में स्थाप के स्याप के स्थाप क्रालक्त उथरा वभद्रलमा क्राइनाय ं प्रवे मधिवले मिर महन् प्रिण ग्रंजनारी म दिकार भक्षतनाम प्यञ्जनभिथप्सम स लगेरा वा भनः इभन्म क्या नेम कार्म करण क्रिएंग्रम उस्बल् भभेग अभग्य भागी उम्बद्धारणाड्स इंड स्वाहासन्तर्था ज्यारिकाक्तिड्रियलः ज्ञान्नाकप्रथाल अग्रातिक नाम नणायुड्ध थवंडी च्डिभन श्रियद्धियथिसुक्रम्म म्राम्याऽवद् नविधि। मुग्देश एक नः सा। व ग्रंव ने धु

िक्सम्। मं जाएलाला भवजार्ग किराक्त नवभिल्थियः किडिनी उधार्य मीधका मनमन्ध्रमनित्र द्वार प्रतिभागित मुलर दे प्रचन्य। एडिएन्यां चें मीहै।वः॥ नंह हम्ब म्हान पस मुख्य मुख्य में मारह के भारतम् माइमः मिहिरीविरायं मामनक्षी भा भभी । यहाम अप्राचित्र उन्नयः थालयः भ इः भिष्ठियः भिद्यभेषिउः करत् छालसभनः क्लाक्षुप्रतः कविः इति वद्भत्रस्प्राष धिर्मलेमाः मनथालः गयत्रथालः क्षत्रना असलीमाः महीर हरनी ने में अर्डिम में थाउँ यनमे यन हरा । यनवा मुडिक नवान । नगानिय नगथामे द्रभद्मः क्यालक्ष क्राः कथालभानीम क्मनीयः कलानियः हिले के

नेइ सिमिया म्हणला कुर कला क्यालभा क्रमनायो डिल्लियः हिनेइ उनचे विश्वः मन त्वंभियः स्पृत्वे वद्वासम् । पष्टा व्यापान , तथाउ : विकार : धिकारक : 93% क्रिकाराः धरानुः मानाः न्यक्ष्मीस्था स्था । न्या । निर्मास्था कर्ता जारा अवस्थाः अवस्थाः अवस्थाः विसायः वृत्ते वृत्यान क्रिया कृता दूर्व इन करी मुक्षाम अउपद्वेषकी उसने मान मुक्त भगभः ग्रेग्रसुवा ग्रह्माना प्रमुखिरेट द्राभुद्रशिधः त्रत्रिष्ठानि हेर्द्रवे नुनेव ना र्भः भवन्य उन्ने चन च से अति भ्राति भ भोक्नणीविका :काभन्वम्यावस्य हिल्लियम् अधिकरियाविश्वार्गी

菊.

